



Shodhpith

International Multidisciplinary Research Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)

Volume: 2

Issue: 3

May-June 2026

सृष्टि-उत्पत्ति विज्ञान और अंतरिक्ष

डॉ. संजय वर्मा

सह-प्राध्यापक, टाइम्स स्कूल ऑफ मीडिया, बेनेट यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा

Article Info: (Received- 21/03/2026, Accepted- 16/4/2026, Published- 10/05/2026)

DOI- [10.64127/Shodhpith.2026v2i3006](https://doi.org/10.64127/Shodhpith.2026v2i3006)

गहन नीला-काला अंतरिक्ष और उसमें टिमटिमाते असंख्य तारे सदा ही मानव मन को अपनी ओर आकर्षित करते आए हैं। मानव की इसी जिज्ञासा ने उसे न केवल सृष्टि की उत्पत्ति और अंतरिक्ष के बारे में जानने की ओर प्रवृत्त किया, वरन् इस कारण अंतरिक्ष विषयक विज्ञान की एक नई शाखा का उदय भी हुआ है। अंतरिक्ष आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं के लिए भी एक अत्यंत प्रिय विषय रहा है। इन पत्र-पत्रिकाओं ने वैदिक युग की अंतरिक्ष विषयक मान्यताओं का परिपोषण करने के अतिरिक्त आधुनिक विचारधाराओं और नई खोजों का सिलसिलेवार ब्यौरा भी प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि इनमें अंतरिक्ष संबंधी जो जानकारी प्रकाशित हुई है, वह वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

एक तथ्यपरक दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि इन पत्र-पत्रिकाओं ने 'सृष्टि और उसकी उत्पत्ति तथा नक्षत्र और वेद जैसे शीर्षकों के अंतर्गत यदि वैदिक विज्ञान की सार्थकता सिद्ध करनी चाही है तो दूसरी ओर विक्रम साराभाई जैसे उद्भट वैज्ञानिक का लेखक अंतरिक्ष की खोज का प्रकाशन पर अंतरिक्ष विषयक नए सिद्धांतों का प्रकाशन भी किया है। आर्य पत्रों में प्रकाशित कुछ लेख ऐसे हैं, जिनमें कहीं अंतरिक्ष में बढ़ रहे प्रदूषण पर चिंता प्रकट की गई है तो रहस्यमयी उड़न-तश्तरियां भी उनकी पैनी निगाहों से बच नहीं पाई हैं।

इसी तरह मानव के चंद्रलोक पर पदार्पण से संबंधित समाचारों व लेखों को हाथों-हाथ प्रकाशित करके इन पत्र-पत्रिकाओं ने अपनी तात्कालिकता का परिचय भी बखूबी दिया है। ग्रहों से मानव जीवन का क्या संबंध है और अंतरिक्ष में पिकनिक का आनंद कैसे लिया जा सकता है या फिर यह जानने के लिए कि 2-3 अरब वर्ष पूर्व मंगल ग्रह पर जीवन का अस्तित्व था या नहीं, तो निःसंदेह हमें इन पत्र-पत्रिकाओं की शरण में जाना पड़ेगा।

यहाँ हम सर्वप्रथम सृष्टि की उत्पत्ति संबंधी उल्लेखों की चर्चा करेंगे। गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित एक लेखक सृष्टि और उसकी उत्पत्ति में सृष्टि के उत्पन्न होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा गया है— गैमो का कथन है कि किसी समय सृष्टि के आरंभ में तारे इतने घुले हुए विरल थे कि वे पूर्ण प्राप्य आकाश को घेरे रहते थे और व्यावहारिक रूप से निरंतर गैस को बनाते रहते थे। बाद को यह गैस विभिन्न बादलों अथवा गैस-बिन्दुओं के रूप में परिवर्तित हो गई। गैस— अस्थिरता, विभाजन तथा मेघनिर्माण के कारण वहाँ कुछ गति अथवा कंपन अवश्य था। इसी लहरदार ब्रह्माण्डीय गैस को वेद में प्सलिल कहा गया है।

'.....ब्रह्माण्ड गैस से बने गैस— बिन्दु बहुत बड़े थे, जिनका व्यास 2 से 3 प्रकाशवर्ष और भार लगभग +10³⁰ किलोग्राम था। इन्हें वेद में आभु कहा गया है। यह आभु तुच्छ अर्थात् हल्की पर्त से ढका हुआ था। इसी वचन से आधुनिक वैज्ञानिक सहमत हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि ऐसे गैस-बिन्दुओं में गुरुत्व आकर्षण की शक्तियाँ



काम किया करती हैं जो कालांतरमें सिकुड़कर साधारण तारे बन जाते हैं। आभु से घना पदार्थ केंद्र में पहुंच जाता है और तुच्छ अर्थात् हल्का पदार्थ चारों ओर आवृत हो जाता है।

इसी लेख में आगे ग्रहमंडल उत्पत्ति के सिद्धांतों की चर्चा भी की गई है, जिसके अनुसार— एक शताब्दी से अधिक समय व्यतीत हुआ जब एक महान जर्मन दार्शनिक इमैनुअल कान्टल के ग्रहमंडल की उत्पत्ति के संबंध में वैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य सिद्धांत को फ्रांस के गणितज्ञ पियरे साइमन डे प्लासने विकसित किया। जर्मनी के भौतिक शास्त्री कार्ल वान वाईजेस्कर ने इस सिद्धांत पर की गई आपत्तियों का उत्तर देकर तथा सूर्य-रचना सम्बन्धी अधिक सूचना देकर इसे पुष्ट किया। इसके पश्चात् क्यूहपर और तेरहार ने आगे संशोधन करके इसे स्थापित किया, जो अब स्वीकृत किया जा चुका है। उन्होंने दिखाया कि सूर्य में एक प्रतिशत धूल है, जिसके कण सूर्य से अलग होकर और परस्पर मिलकर ठोस होते जाते हैं और शेष 99 प्रतिशत गैस हैं, जो केंद्रवर्ती शक्ति के द्वारा बाहर निकाली जाया करती हैं। यही लघु धूल पिण्ड चारों ओर के धूलकणों को अपनी ओर मिलाकर बड़े होते जाते हैं।

लेकिन सृष्टि उत्पत्ति के संबंध में एक प्रश्न बड़े स्वाभाविक ढंग से उठता है कि सृष्टि से निर्माण से पहले क्या था। इसके उत्तर के रूप में वेदवाणी में एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें ऐसे ही प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। इस लेख में वेद-उपनिषदों के उद्धरणों का सहारा लेकर सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है—

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है—

तस्माद् असतः सद् अजायत 6/2

अर्थात्, असत् से सत् की उत्पत्ति हुई है। उपरोक्त वेदमंत्र का भाव यह है कि सृष्टि के आदि में न सत् था, न असत्। उस समय तो प्रकृति के मूल परमाणु साम्यावस्था में विद्यमान थे।

इसी लेख में अंतरिक्ष की उत्पत्ति संबंधी तथ्यों की व्याख्या करते हुए लिखा गया है—

पंच भूतों में आकाश तत्व की उत्पत्ति पूर्व में बतला चुके हैं। यह अंतरिक्ष शब्द उस आकाश शब्द का पर्याय नहीं है। इसीलिए सत्यार्थ-प्रकाश में देव दयानंद ने लिखा हैकृ वास्तव में आकाश अर्थात् अंतरिक्ष की उत्पत्ति नहीं होती। महदण्ड की नाभि से अर्थात् मध्य भाग से अंतरिक्ष की उत्पत्ति हुई।

नाभ्याः आसीद् अन्तरिक्षम्।—ऋ., 10/90/14

अंतरिक्ष में वायु का प्रधान स्थान है।

वायुरंतरिक्षे (दीयते)—जै.ब्रा., 1/92

अर्थात्, अंतरिक्ष में वायु दीप्त होता है। यह किससे दीप्त होता है ?

अग्निना। वायुना आदित्यः।

आदित्येन चंद्रमाः।

अर्थात्, अग्नि से वायु, वायु से सूर्य और सूर्य से चंद्रमा प्रकाशित होता है। प्रश्न होता है कि अग्नि किससे दीप्त होता है? उत्तर है—

प्राणेनवाग्निरुद्दीप्यते। (शत.)

अंतरिक्ष रिक्त स्थान नहीं है। पाश्चात्य वैज्ञानिक भी अंतरिक्ष में कॉस्मिक किरणों आदि का अस्तित्व मानते हैं।

विभिन्न ग्रह-नक्षत्र आकाश में कैसे स्थिर हैं, अंतरिक्ष-विषयक इस मौलिक प्रश्न का उत्तर आर्य पत्र-पत्रिकाओं ने वैदिक आख्यानो में ढूंढने का प्रयत्न किया है। इस परिप्रेक्ष्य में भास्कराचार्य के एक श्लोक का वर्णन करते हुए वेदवाणी के एक लेख में स्पष्ट किया गया है कि—

एक स्थान पर सिद्धांत शिरोमणि में उन्होंने लिखा है कि हर एक ग्रह-नक्षत्र और सूर्य आकर्षण शक्ति से ही आकाश में स्थित है। उस समय जो लोग उसका आधार किसी अन्य वस्तु को मानते थे, उनको बहुत अच्छी तरह तर्क द्वारा पृथ्वी को आधारहीन बताया गया है। अतः जहाँ आधुनिक विज्ञान न्यूटन के आकर्षण सिद्धांत से प्रभावित होकर पृथ्वी की स्थिति पर विशेष विचार करता है। वहीं हमारा भारतीय विज्ञान आकाशीय पिंडों का वृहद् अध्ययन कर चुका था जिसके कई प्रमाण हमें प्राप्त हो जाते हैं।

सौर-कलंकों, जिसे अंग्रेजी में प्सन-स्पाट्स कहा जाता है, के बारे में उपर्युक्त संदर्भित लेख में ही वैदिक प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं—

बहुत से विद्वान निम्नलिखित मंत्र के अर्थ से सूर्य के स्थायीत्व का अर्थ लेते हैं— आकृष्णेन रजसा वर्तमानो।

निवेशयन्नामृतं मर्त्यञ्च— ऋ., 1/35/2

इसकी टीका करते हुए सिद्धांत शिरोमणि में लिखा है कि कृष्ण (काले) स्थान से आवृत्त होकर सूर्य ऊपर आ रहा है।

....लेकिन यहाँ शंका उठती है कि सूर्य जहाँ है, वहाँ अंधेरा कैसे ? यदि मंत्र को ध्यान से देखा जाए तो पता चलेगा कि कालेपन से आवृत्त सूर्य को रश्मियाँ ऊपर ला रही हैं। अब शंका उठती है कि सूर्य में कालापन कहाँ से आया। इसका समाधान आधुनिक विज्ञान की सहायता से हो जाता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने दूरबीन से कई फोटो लेकर यह पता लगाया है कि सूर्य में कई बड़े-बड़े काले धब्बे हैं, जो प्रतिक्षण बदलते रहते हैं। अन्य स्थान मारिचि नाम से पुकारे जाते हैं। आज से हजारों वर्ष पूर्व ही हमारे ऋषियों ने यह पता लिया था कि सूर्य में कई बड़े-बड़े धब्बे हैं। अवश्य ही सूर्य के विषय में आधुनिक विज्ञान उतना नहीं जानता, जितना हमारे ऋषि जानते थे।

अंतरिक्ष या ज्योतिष विज्ञान पर जानकारी आर्य समाज के प्रमुख आरंभिक पत्र— षसद्धर्म प्रचारकश में भी प्रचुरता से छपा करती थी। इसके एक नियमित स्तंभ— षसबके आधार और सब में व्यापकश में प्रायः ऐसी ही सामग्री हुआ करती थी। इसी के एक अंक में तैत्तरीय आरण्यक के एक मंत्र के उल्लेख से षसूर्य की ऊर्जा के संबंध में लिखा गया है—

आरोगी, भ्राजः, पटरः, पतंग, स्वर्णरो, ज्योतिषीयान, विभासः।

ते अस्मै सर्वे दिवमातपन्ति, ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरन्तः॥

—अर्थात्, आरोग्य, भ्राज, पटर, पतंग, स्वर्णर, ज्योतिषी यान और विभास, ये सब के सब षदिवमातपन्ति आकाश को भली-भाँति तपा रहे हैं अर्थात् ये सात प्रकार के सूर्य आकाशस्थ सब पदार्थों में विशेष गर्मी और प्रकाश दे रहे हैं और जिस प्रकार गाय दूध देती हुई प्राणियों का कल्याण करती है, उसी प्रकार ये सात प्रकार के सूर्य हम लोगों के सुखों के लिए षऊर्जं अर्थात् शक्तियों को दूध की तरह दुहाते हुए नियमित गति से भलीभाँति चल रहे हैं।

लगभग इसी तरह का भाव इस स्तंभ के एक अन्य लेख में मिलता है, जिसमें—प्सातों दिशाओं वाले नाना सूर्याः, अर्थात् अनेक सूर्य जो सात प्रकार के पदार्थों को देने वाले हैं..... उनसे रक्षा करने व सबके लिए ज्ञान व ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है।

इस लेख में नक्षत्र-राशियों का भी वर्णन है—

आकाश में भिन्न-भिन्न सूर्यो अर्थात् ताराओं के विशेष समूहों का भी ज्योतिषियों ने भिन्न-भिन्न नाम रख दिए हैं, जिन्हें राशि कहते हैं।

सौरमंडल को विवेचित करते हुए आर्यमित्र के एक स्तंभ— विज्ञान वार्ता में लिखा गया है—

सूर्य के ग्रह-उपग्रह के मंडल को सौरमंडल कहते हैं। मानव का जन्म, विकास एवं मृत्यु सभी कुछ इस पृथ्वी पर होता है, जो सौरमण्डल का एक ग्रह है।

इसके अतिरिक्त इसी लेख में पृथ्वी से सूर्य की दूरी, चंद्रमा व अन्य ग्रहों-उपग्रहों सहित अंतरिक्ष में 10 अरब तारे विद्यमान होने का उल्लेख किया गया है।

आर्यमित्र में ही प्रकाशित एक रूसी वैज्ञानिक सखोलोवस्की के अनूदित लेख में यह लिखा गया था कि 2-3 अरब वर्ष पूर्व मंगल ग्रह में बुद्धिमान व्यक्ति रहा करते थे। इस संबंध में लिखा गया है—

षमंगल ग्रह के दो चंद्रमा संभवतः कृत्रिम उपग्रह हैं, जिन्हें 2 या 3 अरब वर्ष पूर्व मंगल ग्रह में रहने वाले बुद्धिमान व्यक्तियों ने अयनवृत्त में भेजा होगा।

.....वैज्ञानिकों का विचार है कि इन चंद्रमाओं-फोबोस और डीमोस के उद्गम की व्याख्या प्रकृति में पाए जाने वाले किसी तरीके से नहीं की जा सकती। बहुत से वैज्ञानिकों का विचार है कि 2-3 अरब वर्ष पूर्व मंगल के वायुमंडल में ऑक्सीजन थी। उस समय मंगल ग्रह पर ऐसे जीव थे जो अत्यंत बुद्धिमान होंगे और जिनकी संस्कृति बहुत उन्नत रही होगी। अध्ययन से यह पता चला है कि मंगल के ये उपग्रह अन्य ग्रहों के उपग्रहों से इन बातों में भिन्न हैं कि उनका आकार बहुत छोटा है और ये अपने ग्रह के बहुत पास हैं। फोबोस में अन्य ग्रहों से एक और भिन्नता दिखाई देती है। वह यह कि पिछली कुछ दशाब्दियों से यह अपने निश्चित पथ से 211 डिग्री हट गया है और इसकी रफ्तार तेज हो गई है। इसका मतलब यह है कि वह मंगल के अधिक निकट आ गया है। यही बात पृथ्वी से छोड़े गए उपग्रह के बारे में होती है। पृथ्वी के वायुमंडल से रगड़ खाने के कारण उनकी रफ्तार धीमी हो जाती है और वे पृथ्वी के निकट आ जाते हैं।



आर्यमित्र में अंतरिक्ष की खोज पर प्रकाशित वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के एक महत्वपूर्ण लेख में स्पष्टतः लिखा गया है कि—

बहुत से कम लोग यह समझते हैं कि दर्शन, साहित्य या कला की तरह भौतिक विज्ञान में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। यह बात गलत है। वैज्ञानिक भी कल्पना करता है, किंतु वह कल्पनाओं को प्रयोगों को कसौटी पर कसता है। पृथ्वी पर रहकर मनुष्य आकाश के बारे में जानकारी वायुमण्डल और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को पार कर आए हुए विकिरण से प्राप्त कर सकता था।

.....दूरबीन आदि यन्त्रों और रेडियो विकिरण से मनुष्य को सौरमण्डल और ब्रह्मांड के बारे में जानकारी मिली। इसके अलावा पृथ्वी पर ध्रुवों के पास इकट्ठे होने वाले कम आवेशित कणों से जो ध्रुवीय प्रकाश पैदा होता है, उससे भी आकाश के बारे में कुछ जानकारी मिली। आकाश-गंगा में पैदा होने वाली अधिक शक्तिशाली ब्रह्माण्ड किरणों के अध्ययन से भी कुछ सामग्री मिली। इन सब अध्ययनों से ब्रह्माण्ड किरणों के अध्ययन से भी कुछ सामग्री मिली। इन सब अध्ययनों से ब्रह्माण्ड विज्ञान, आकाश-गंगाओं और नक्षत्रों की रचना, तारों के बीच के आकाश में पदार्थ तथा बल-क्षेत्रों, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की आकृति और हमारी पृथ्वी के वायुमंडल में होने वाली घटनाओं के बारे में जटिल सिद्धांत निकाले गए।

इस लेख में— आकाश के चार क्षेत्र, अन्य ग्रहों में जीवन, मनुष्य क्यों दूसरे ग्रहों में जाना चाहता है, हमारे देश में खोजकार्य आदि बिन्दुओं को निरूपित करते हुए बड़ा ही वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

वैज्ञानिक समाचारों व लेखों को समय पर व घटना के अनुसार तत्काल प्रकाशित करने में आर्य पत्रिकाएं किसी से पीछे नहीं रही हैं। जैसे 21 जुलाई, 1969 को मानव ने जब चंद्रमा पर पदार्पण किया तो 3 अगस्त, 1969 के “आर्यमित्र” में इस विषय पर एक विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ। इसमें लिखा गया था—

“सृष्टि के इतिहास में पहली बार अमेरिका के दो मनुष्यों ने 21 जुलाई को 8 बजकर 27 मिनट पर चांद की धरती पर पग रखा। यह गौरव अमरीकी अंतरिक्ष-यात्रा— आर्मस्ट्रांग को प्राप्त हुआ। उनके 20 मिनट बाद श्री एल्लिडन भी चंद्रपालकी से निकलकर चंद्रतल पर उतर आया। उन्होंने वहाँ अमेरिका का ध्वज और शांतिपट्टी गाड़ी। कुछ वैज्ञानिक परीक्षण किए। 2 घंटे 14 मिनट बाद वह पुनः चंद्रपालकी में आ गए। 24 जुलाई को रात 10 बजकर 20 मिनट पर प्रशान्त महासागर में ये तीनों अंतरिक्ष-यात्री सकुशल उतर आए।”

इन्हीं तिथियों में एक अन्य आर्य पत्रिका— “आर्य मार्तण्ड” ने मानव की चंद्रमा पर विजय के उपलक्ष्य में एक संपादकीय लेख भी लिखा। इसमें लिखा गया था—

“विज्ञान ने कितनी आशातीत प्रगति की है। यह देखकर मानव-मस्तिष्क और बुद्धि कभी-कभी तो अत्यंत आश्चर्यचकित हो उठती है। अभी-अभी विगत 21 जुलाई को अमेरिका के तीन अंतरिक्षयात्रियों—आर्मस्ट्रांग, कोलिंग्स और एल्लिडन ने जो अभूतपूर्व साहस का कार्य कर चंद्रलोक की यात्रा सानंद समाप्त की है, उससे समस्त विश्व विस्मित हो उठा है। इन तीनों ही यात्रियों ने लगभग ढाई लाख मील दूरी की यात्रा अपने जीवन की बाजी लगाकर की है। वे चंद्र धरातल की वायु, पत्थर तथा मिट्टी को साथ लाए और विश्व के वैज्ञानिक इतिहास में एक नवीन अध्याय प्रारंभ कर दिया है, जो मानव की भौतिक उन्नति की पराकाष्ठा है।

अंतरिक्ष में घटने वाली कौतूहलपूर्ण घटनाओं पर भी इन पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि प्रकाशित हुआ करते थे। सूर्य और चंद्रग्रहण ऐसी ही विचित्र अंतरिक्षीय घटनाएं हैं, जिन पर आर्य पत्रों ने पर्याप्त चर्चा की है। इस विषय में एक लेख “सार्वदेशिक” में प्रकाशित हुआ था। इसमें लिखा गया है कि— “सूर्यग्रहण में चंद्रमा सूर्य को ढक लेता है और चंद्रग्रहण में पृथ्वी की छाया चंद्रमा को ढक लेती है। सूर्य सिद्धांत यही बता रहा है—

छाह कोभास्करस्येन्द्र रधस्यीधनवद्भवेते। भूच्छायाप्राड—मुखश्चन्द्रो विशन्यस्य भवेहसो।। (सूर्य सिद्धांत)

सूर्यग्रहण में चंद्रमा बादल के सदृश सूर्य को ढांप लेता है और चंद्रग्रहण में चंद्रमा पूर्व की ओर जाता हुआ पृथ्वी की छाया में आ जाता है।

आगे भी—

पूर्वी विमुखो गच्छत् कुच्छायान्तं पविः शशिविशतितेन। प्रा कपग्रहण पश्चात् मोक्षोप्यमिस्सरतः।। (सि.शि., गोलाध्याये)

जब चंद्रमा पूर्व की ओर जाता हुआ भूमि की छाया में चला जाता है तब ग्रहण पड़ता है। जब छाया से निकल जाता है तब मोक्ष हो जाता है। ग्रह-लाघव में भी कहा है कि—

च्छादयत्यर्कं. विन्दुविधूंभूमिभाः ।।

—चंद्रग्रहण में भूमि की छाया चंद्रमा को और सूर्यग्रहण में चंद्रमा सूर्य को ढक लेता है।

एक अन्य विस्मयकारी अंतरिक्षीय घटना पुच्छल तारे के विषय में भी आर्य पत्रों में यदाकदा चर्चा होती रही है। सद्धर्म प्रचारक के एक अंक में पुच्छल तारे का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

कुछ दिनों से फिर एक पुच्छल तारा आकाश में अकस्मात् उदित हो गया है। इस तारे के दिखने का समाचार ज्योतिषियों ने पहले प्रकाशित नहीं किया था। यद्यपि यह हैली के तारे की तरह बड़ा नहीं है, तथापि इसकी सूरत—शक्ल उससे कुछ मिलती—जुलती है। यह तारा प्रभात के समय सूर्योदय के कुछ पूर्व प्रकाशित होता है। दो-चार दिनों तक यह बहुत अच्छी तरह दिखता रहा, किंतु अब वैसा स्पष्ट नहीं रहा।

इसी प्रकार आर्य समाज की प्रमुख विज्ञान पत्रिका कृष्णार्थभट्ट में रहस्यमयी उड़न—तश्तरियों के बारे में लिखा गया है—

....पुराणवर्णित कितने ही रहस्यों को आधुनिक विज्ञान सुलझा चुका है, लेकिन कुछ अनुभव अब भी ऐसे हैं, जिनका रहस्य विज्ञान से अब तक नहीं सुलझाया जा सका है। इनमें से एक है उड़नतश्तरियों का इन्हें यू.एफ.ओ. (अन आइडेंटिफाइड फ्लाईंग ऑब्जेक्ट) भी कहते हैं। पहले इन्हें फ्लाईंग सॉसर कहा जाता था। उड़न तश्तरियों का इन्हें देखने वालों ने अलग-अलग ढंग से वर्णन किया है कुछ व्यक्तियों ने इन्हें अपनी धुरी पर घूमती हुई काली तश्तरी के रूप में देखा है।

कुछ अन्य विषय जैसे पृथ्वी का नया उपग्रह, शार्टवेव प्रसारण के जरिए अंतरिक्ष की खोज, कृत्रिम उपग्रह, उल्काएं, ग्रहों का मानव जीवन से संबंध, अंतरिक्ष अनुसंधान और भारत आदि अधुनातन विषयों पर भी आर्य पत्र-पत्रिकाओं ने कई लेख प्रकाशित किए हैं। अंतरिक्ष में भेजे जाने वाली आणविक घड़ी के निर्माण जैसे आधुनिक विषय के संबंध में पर्याप्त जानकारी देते हुए आर्यमित्र में एक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किया गया, जिसमें लिखा है—

एक अमेरिकी उपग्रह में रखकर अंतरिक्ष में भेजने के लिए एक आणविक घड़ी तैयार की जा रही है। यह घड़ी बिल्कुल सही समय देगी और एक हजार वर्ष में एक सेकेंड भी आगे—पीछे नहीं होगी। पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमते हुए यह टाइमपीस एक सेकेंड में 24 अरब बार टिकिंग की ध्वनि करेगा। अंतरिक्ष में समय की गति का भूमि पर के समय की गति से तुलना करने के लिए इस घड़ी का प्रयोग किया जाएगा। अपनी तीन सप्ताह की उड़ान में यह घड़ी रेखागणित के अनुसार पृथ्वी के आकार को तथा प्रकाश की गति अथवा रेडियो तरंगों के वेग को भी मापेगी। यह इस बात का भी निश्चय करने में सहायता करेगी कि क्या अंतरिक्ष पृथ्वी के सभी ओर समान है। इस घड़ी को तैयार करने का मुख्य उद्देश्य स्व. अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षतावाद के विशेष सिद्धांत की पूरी तरह से जांच करना है। अमेरिकी वैज्ञानिकों का विश्वास है कि अंतरिक्ष के आकर्षण—युक्त क्षेत्रों में समय बड़े नक्षत्रों की तुलना में विभिन्न गति से व्यतीत होता है। उन्होंने दो जुड़वा भाइयों का उदाहरण देकर इस सिद्धांत पर प्रकाश डाला है। उन्होंने बताया है कि यदि जुड़वा भाइयों में से एक अंतरिक्ष में तेज गति से यात्रा करे तो वह पृथ्वी पर लौटने पर अपने भाई से आयु में छोटा हो जाएगा। यदि लगभग प्रकाश की गति से अंतरिक्ष में 24 वर्ष तक यात्रा जारी रहे तो उसे पृथ्वी पर लौटने पर पृथ्वी लाखों वर्ष पुरानी प्रतीत होगी। यह सिद्धांत आमतौर पर वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

एक आणविक घड़ी न तो साधारण टाइमपीस के आकार की होती है और न ही उसके समान कार्य करती है। यह एक फुट लंबी सिलेण्ड्रिकल विद्युदणु ट्यूब है। ट्यूब के भीतर अमोनिया कण हैं, जो निरंतर कंपायमान रहते हैं। प्रत्येक कंपन से घड़ी में टिक की ध्वनि होती है। कंपन की गति भूमि की अपेक्षा अंतरिक्ष में अधिक तेज रहती है। इस बात को सिद्ध करने के लिए आणविक घड़ी को संभवतः पृथ्वी से 8000 मील ऊपर कक्षा में स्थापित किया जाएगा। एक वैसी ही घड़ी पृथ्वी पर रखी जाएगी। जैसे ही भू-उपग्रह में रखी हुई आणविक घड़ी 18,000 मील प्रति घंटा की गति से पृथ्वी की परिक्रमा करेगी, उसके प्रकंपन अथवा टिक-टिक की ध्वनियां रेडियो द्वारा पृथ्वी पर भेजी जाएंगी। दोनों घड़ियों के प्रकंपनों को मापकर तथा उनकी तुलना करके वैज्ञानिक लोग अंतरिक्ष में और भूमि पर समय की गति के अंतर का निश्चय कर सकेंगे।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अंतरिक्ष-विषयक सामग्री का समय-समय पर प्रकाशन करके आर्य पत्र-पत्रिकाओं ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि विज्ञान विषयों के प्रकाशन की तुलना में अन्य समकालीन पत्रों से



उनका स्थान अग्रणी रहा है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ-

1. सृष्टि और उसकी उत्पत्ति- डॉ. रामेश्वर दयाल गुप्त/गुरुकुल पत्रिका/ सन् 1982/पृ. 20-24
2. वैदिक सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान- ब. बलदेव जी/वेदवाणी/फरवरी, 1976/पृ. 10-17
3. वेदों और पुराणों में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत- श्री महेंद्र प्रताप श्रीवास्तव/वेदवाणी/दिसंबर, 1967/पृ. 19-22
4. सबके आधार और सबमें व्यापक रू तारकावली में परमात्मा की शक्ति का प्रकाश/सद्धर्म प्रचारक/27 मई, 1908/ पृ. 4-5
5. सबके आधार और सबमें व्यापक रू तारकावली में परमात्मा की शक्ति का प्रकाश/सद्धर्म प्रचारक/3 जून, 1908/ पृ. 3-6
6. विज्ञान वार्ता रू हमारा सौरमंडल/आर्यमित्र/ 10 जुलाई, 1966/पृ. 11
7. 2-3 अरब वर्ष पूर्व मंगल ग्रह में बुद्धिमान व्यक्ति रहते थे- एक रूसी वैज्ञानिक का दावा/आर्यमित्र/ 17 मई, 1959/ पृ. 11
8. अंतरिक्ष की खोज- श्री विक्रम साराभाई/आर्यमित्र/ 23 अक्टूबर, 1966/ पृ. 4, 13
9. अमेरिकी मानव चंद्रलोक पर पहुंचकर वापस आ गए/आर्यमित्र/ 3 अगस्त, 1969/ पृ. 5, 11
10. चंद्रलोक पर विजय- संपादकीय/आर्य मार्तण्ड/ 1 अगस्त, 1969/ पृ. 3
11. सूर्य और चंद्रग्रहण- श्री सुवर्णसिंह आर्य/सार्वदेशिक/ जून, 1955/ पृ. 187
12. फिर पुच्छल तारा/सद्धर्म प्रचारक/ 11 अक्टूबर, 1911/ पृ.
13. रहस्यमयी उड़नतश्तरियां- प्रो.विजेन्द्र कुमार/आर्यभट्ट/अप्रैल, 1982/ पृ.11-13
14. अंतरिक्ष के लिए अमेरिकी आणविक घड़ी, विज्ञान वार्ता/आर्यमित्र/24 अप्रैल, 1960/ पृ.15

Cite this Article-

"डॉ. संजय वमा", "सृष्टि-उत्पत्ति विज्ञान और अंतरिक्ष" Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:03, May-June 2026

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."